

## रोमियों के नाम पौलूस रसूल का खत

११११११११११ ११ ११११११

रोमियों 1:1 इशारा करती है कि रोमिया के खत का मुसन्निफ़ पौलूस था, 16 साल से चल रही पुरानी रोम की सलतन में नीरो बादशाह हुकूमत करता था, उस के तीन साल गुज़रने के बाद पौलूस ने यूनानी शहर कुरिन्थ से यह खत रोमियों के नाम लिखा। मश्हूर — ओमारूफ़ यूनानी शहर रोम भी जिन्सी तालुक्रात और बुतपरस्ती के लिए अड्डा माना जाता था। सो जब पौलूस ने इंसान की गुनाहगारी की बाबत रोम के लोगों को लिखा तो साथ ही यह भी लिखा कि खुदा का किस मुजिज़ाना तरीके से लोगों की जिन्दगियाँ बदलता है। पौलूस के मोजुआत मसीही मनादी की बुनियादी बातों को बैरूनी खाका पेश करत हैं। खुदा की पाकीज़गी, बनी इंसान के गुनाह के साथ मुज़ाहिमत नहीं कर सकती। इस लिए येसू मसीह के ज़रिए बचाने वाला फ़ज़ल पेश किया गया।

१११११ १११११ ११ ११११११११ ११ ११११

इस खत को कुरिन्थ से लिखे जाने की तारीख़ तक़रीबन 57 ईस्वी है।

लिखे जाने की खास जगह रोम भी हो सकती है।

११११११ ११११११११११ १११११ १११११

तमाम रोमियों के लिए जो खुदा के अज़ीज़ हैं और उस के पाक लोग कहलाए जाते हैं यानी रोम शहर के कलीसिया के अर्कान (रोमियों 1:7) रोमी सलतनत का पाय तख़्त।

११११ ११११११११

रोमियों के नाम खत पौलूस की तरफ़ से साफ़ तौर से और बा — उसूल, बा — क़ाइदा तौर से लिखी गई मसीही इल्म — ए — इलाही की पेशकश है। पौलूस ने बहस की शुरूआत बनी इंसान

की गुनहगारी से की। खुदा के खिलाफ हमारे गुनाहों की बगावत के सबब से तमाम बनी इन्सान मुजरिम ठहराए गए हैं। किसी तरह खुदा अपने फ़ज़ल में होकर उस के बेटे येसू मसीह पर ईमान लाने के वसीले से रास्तबाज़ी इनायत करता है। जब हम खुदा के ज़रिए रास्तबाज़ ठहराए जाते हैं तो हम छुटकारा या नजात हासिल करते हैं क्योंकि मसीह का खून हमारे गुनाहों को ढांप देता है। पौलूस के बर्ताव के इन मुआमलात को एक उसूली और मुकम्मल तौर से पेश किया गया है कि किस तरह एक शख्स चाहे वह मर्द हो या औरत गुनाह की सज़ा और ताक़त से बच सकता या सकती है।

### ????? 1

खुदा की रास्तबाज़ी।

#### बैरूनी खाका

1. गुनाह की सज़ा की हालत और रास्तबाज़ी की ज़रूरत — 1:18-3:20
2. रास्तबाज़ी को हक़ बजानिब मंसूब किया गया — 3:21-5:21
3. रास्तबाज़ी ने पाकीज़गी को ज़ाहिर किया — 6:1-8:39
4. बनी इसाईल के लिए इलाही मुहय्या — 9:1-11:36
5. रास्तबाज़ शख्स की तामील का दस्तूर — 12:1-15:13
6. खात्मा:शख़्सी पैग़ाम — 15:14-16:27

### ????? ?? ?????

1 पौलूस की तरफ़ से जो ईसा मसीह का बन्दा है और रसूल होने के लिए बुलाया गया और खुदा की उस खुशख़बरी के लिए अलग किया गया।

2 पस मैं तुम को भी जो रोमा में हों खुशख़बरी सुनाने को जहाँ तक मेरी ताक़त है मैं तैयार हूँ।

3 अपने बेटे खुदावन्द ईसा मसीह के बारे में वा'दा किया था जो जिस्म के ऐ'तिबार से तो दाऊद की नस्ल से पैदा हुआ।

4 लेकिन पाकीज़गी की रूह के ऐतबार से मुर्दाँ में से जी उठने की वजह से कुदरत के साथ खुदा का बेटा ठहरा।

5 जिस के ज़रिए हम को फ़ज़ल और रिसालत मिली ताकि उसके नाम की ख़ातिर सब क्रौमों में से लोग ईमान के ताबे हों।

6 जिन में से तुम भी ईसा मसीह के होने के लिए बुलाए गए हो।

7 उन सब के नाम जो रोम में खुदा के प्यारे हैं और मुक़द्दस होने के लिए बुलाए गए हैं; हमारे बाप खुदा और खुदावन्द ईसा मसीह की तरफ़ से तुम्हें फ़ज़ल और इत्मीनान हासिल होता रहे।

8 पहले, तो मैं तुम सब के बारे में ईसा मसीह के वसीले से अपने खुदा का शुक्र करता हूँ कि तुम्हारे ईमान का तमाम दुनिया में नाम हो रहा है।

9 चुनाँचे खुदा जिस की इबादत में अपनी रूह से उसके बेटे की खुशख़बरी देने में करता हूँ वही मेरा गवाह है कि मैं बिला नागा तुम्हें याद करता हूँ।

10 और अपनी दुआओं में हमेशा ये गुज़ारिश करता हूँ कि अब आख़िरकार खुदा की मर्ज़ी से मुझे तुम्हारे पास आने में किसी तरह कामियाबी हो।

11 क्यूँकि मैं तुम्हारी मुलाक़ात का मुश्ताक़ हूँ, ताकि तुम को कोई रूहानी ने'मत दूँ जिस से तुम मज़बूत हो जाओ।

12 गरज़ मैं भी तुम्हारे दर्मियान हो कर तुम्हारे साथ उस ईमान के ज़रिए तसल्ली पाऊँ जो तुम में और मुझ में दोनों में है।

13 और ऐ' भाइयों; मैं इस से तुम्हारा ना वाकिफ़ रहना नहीं चाहता कि मैंने बार बार तुम्हारे पास आने का इरादा किया ताकि जैसा मुझे और ग़ैर क्रौमों में फल मिला वैसा ही तुम में भी मिले मगर आज तक रुका रहा।

14 मैं यूनानियों और ग़ैर यूनानियों दानाओं और नादानों का कर्ज़दार हूँ।

15 पस मैं तुम को भी जो रोमा में हों खुशख़बरी सुनाने को जहाँ तक मेरी ताक़त है मैं तैयार हूँ।

16 क्योंकि मैं इन्जील से शर्माता नहीं इसलिए कि वो हर एक ईमान लानेवाले के वास्ते पहले यहूदियों फिर यूनानी के वास्ते नजात के लिए खुदा की कुदरत है।

17 इस वास्ते कि उसमें खुदा की रास्तबाज़ी ईमान से “और ईमान के लिए ज़ाहिर होती है जैसा लिखा है रास्तबाज़ ईमान से जीता रहेगा”

18 क्योंकि खुदा का ग़ज़ब उन आदमियों की तमाम बेदीनी और नारास्ती पर आसमान से ज़ाहिर होता है।

19 क्योंकि जो कुछ खुदा के बारे में मालूम हो सकता है वो उनको बातिन में ज़ाहिर है इसलिए कि खुदा ने उनको उन पर ज़ाहिर कर दिया।

20 क्योंकि उसकी अनदेखी सिफ़तें या'नी उसकी अज़ली कुदरत और खुदाइयत दुनिया की पैदाइश के वक़्त से बनाई हुई चीज़ों के ज़रिए मा'लूम हो कर साफ़ नज़र आती हैं यहाँ तक कि उन को कुछ बहाना बाक़ी नहीं।

21 इसलिए कि अग़र्चे खुदाई के लायक़ उसकी बड़ाई और शुक्रगुज़ारी न की बल्कि बेकार के ख़याल में पड़ गए, और उनके नासमझ दिलों पर अँधेरा छा गया।

22 वो अपने आप को अक़्लमन्द समझ कर बेवकूफ़ बन गए।

23 और ग़ैर फ़ानी खुदा के जलाल को फ़ानी इंसान और परिन्दों और चौपायों और कीड़ों मकोड़ों की सूरत में बदल डाला

24 इस वास्ते खुदा ने उनके दिलों की ख़्वाहिशों के मुताबिक़ उन्हें नापाकी में छोड़ दिया कि उन के बदन आपस में बेइज़्जत किए जाएँ।

25 इसलिए कि उन्होंने खुदा की सच्चाई को बदल कर झूठ बना डाला और मख्लूक़ात की ज़्यादा इबादत की बनिस्बत उस ख़ालिक़ के जो हमेशा तक महमूद है; आमीन।

26 इसी वजह से खुदा ने उनको गन्दी आदतों में छोड़ दिया यहाँ तक कि उनकी औरतों ने अपने तब; ई काम को ख़िलाफ़'ए तब'आ काम से बदल डाला।

27 इसी तरह मर्द भी औरतों से तब; ई काम छोड़ कर आपस की शहवत से मस्त हो गए; या'नी आदमियों ने आदमियों के साथ रुसिहाई का काम कर के अपने आप में अपने काम के मुआफ़िक़ बदला पाया।

28 और जिस तरह उन्होंने खुदा को पहचानना नापसन्द किया उसी तरह खुदा ने भी उनको नापसन्दीदा अक़ल के हवाले कर दिया कि नालायक़ हरकतें करें।

29 पस वो हर तरह की नारास्ती बदी लालच और बदख़्वाही से भर गए, खूनरेजी, झगड़े, मक्कारी और अदावत से मा'मूर हो गए, और शीबत करने वाले।

30 बदग़ो खुदा की नज़र में नफ़रती औरों को बे'इज़्ज़त करनेवाला, मगरूर, शेखीबाज़, बदियों के बानी, माँ बाप के नाफ़रमान,

31 बेवकूफ़, वादा ख़िलाफ़, तबई तौर से मुहब्बत से ख़ाली और बे रहम हो गए।

32 हालाँकि वो खुदा का हुक्म जानते हैं कि ऐसे काम करने वाले मौत की सज़ा के लायक़ हैं फिर भी न सिर्फ़ खुद ही ऐसे काम करते हैं बल्कि और करनेवालो से भी खुश होते हैं।

## 2

?????? ?? ????? ??????? ?? ?????

1 पस ऐ इल्ज़ाम लगाने वाले तू कोई क्यूँ न हो तेरे पास कोई बहाना नहीं क्यूँकि जिस बात से तू दूसरे पर इल्ज़ाम लगाता है

उसी का तू अपने आप को मुजरिम ठहराता है इसलिए कि तू जो इल्ज़ाम लगाता है खुद वही काम करता है।

2 और हम जानते हैं कि ऐसे काम करने वालों की अदालत खुदा की तरफ़ से हक़ के मुताबिक़ होती है।

3 ऐ भाई! तू जो ऐसे काम करने वालों पर इल्ज़ाम लगाता है और खुद वही काम करता है क्या ये समझता है कि तू खुदा की अदालत से बच जाएगा।

4 या तू उसकी महरबानी और बरदाश्त और सब्र की दौलत को नाचीज़ जानता है और नहीं समझता कि खुदा की महरबानी तुझ को तौबा की तरफ़ माएल करती है।

5 बल्कि तू अपने सख़्त और न तोबा करने वाले दिल के मुताबिक़ उस क्रहर के दिन के लिए अपने वास्ते ग़ज़ब का काम कर रहा है जिस में खुदा की सच्ची अदालत ज़ाहिर होगी।

6 वो हर एक को उस के कामों के मुवाफ़िक़ बदला देगा।

7 जो अच्छे काम में साबित क़दम रह कर जलाल और इज़्ज़त और बक्रा के तालिब होते हैं उनको हमेशा की ज़िन्दगी देगा।

8 मगर जो ना इत्तफ़ाक़ी अन्दाज़ और हक़ के न माननेवाले बल्कि नारास्ती के माननेवाले हैं उन पर ग़ज़ब और क्रहर होगा।

9 और मुसीबत और तंगी हर एक बदकार की जान पर आएगी पहले यहूदी की फिर यूनानी की।

10 मगर जलाल और इज़्ज़त और सलामती हर एक नेक काम करने वाले को मिलेगी; पहले यहूदी को फिर यूनानी को।

11 क्यूँकि खुदा के यहाँ किसी की तरफ़दारी नहीं।

12 इसलिए कि जिन्होंने बग़ैर शरी'अत पाए गुनाह किया वो बग़ैर शरी'अत के हलाक भी होगा और जिन्होंने शरी'अत के मातहत होकर गुनाह किया उन की सज़ा शरी'अत के मुवाफ़िक़ होगी

13 क्यूँकि शरी'अत के सुननेवाले खुदा के नज़दीक रास्तबाज़ नहीं होते बल्कि शरी'अत पर अमल करनेवाले रास्तबाज़ ठहराए जाएँगे।

14 इसलिए कि जब वो क़ौमें जो शरी'अत नहीं रखती अपनी तबी'अत से शरी'अत के काम करती हैं तो बावजूद शरी'अत रखने के अपने लिए खुद एक शरी'अत हैं।

15 चुनाँचे वो शरी'अत की बातें अपने दिलों पर लिखी हुई दिखाती हैं और उन का दिल भी उन बातों की गवाही देता है और उनके आपसी खयालात या तो उन पर इल्ज़ाम लगाते हैं या उन को माज़ूर रखते हैं।

16 जिस रोज़ खुदा खुशख़बरी के मुताबिक़ जो मैं ऐलान करता हूँ ईसा मसीह की मारिफ़त आदमियों की छुपी बातों का इन्साफ़ करेगा।

17 पस अगर तू यहूदी कहलाता और शरी'अत पर भरोसा और खुदा पर फ़स्र करता है।

18 और उस की मर्ज़ी जानता और शरी'अत की ता'लीम पाकर उम्दा बातें पसन्द करता है।

19 और अगर तुझको इस बात पर भी भरोसा है कि मैं अँधों का रहनुमा और अंधेरे में पड़े हुआँ के लिए रोशनी।

20 और नादानों का तरबियत करनेवाला और बच्चो का उस्ताद हूँ और 'इल्म और हक़ का जो नमूना शरी'अत में है वो मेरे पास है।

21 पस तू जो औरों को सिखाता है अपने आप को क्यूँ नहीं सिखाता? तू जो बताता है कि चोरी न करना तब तू खुद क्यूँ चोरी करता है? तू जो कहता है ज़िना न करना; तब तू क्यूँ ज़िना करता है?

22 तू जो बुतों से नफ़रत रखता है? तब खुद क्यूँ बुतख़ानो को लूटता है?



5 अगर हमारी नारास्ती खुदा की रास्तबाज़ी की खूबी को ज़ाहिर करती है, तो हम क्या करें? क्या ये कि खुदा बेवफ़ा है जो ग़ज़ब नाज़िल करता है मैं ये बात इंसान की तरह करता हूँ।

6 हरगिज़ नहीं वर्ना खुदा क्यूँकर दुनिया का इन्साफ़ करेगा।

7 अगर मेरे झूठ की वजह से खुदा की सच्चाई उसके जलाल के वास्ते ज़्यादा ज़ाहिर हुई तो फिर क्यूँ गुनाहगार की तरह मुझ पर हुक्म दिया जाता है?

8 और “हम क्यूँ बुराई न करें ताकि भलाई पैदा हो” चुनाँचे हम पर ये तोहमत भी लगाई जाती है और कुछ कहते हैं इनकी यही कहावत है मगर ऐसों का मुजरिम ठहरना इन्साफ़ है।

9 पस क्या हुआ; क्या हम कुछ फ़ज़ीलत रखते हैं? बिल्कुल नहीं क्यूँकि हम यहूदियों और यूनानियों दोनों पर पहले ही ये इल्ज़ाम लगा चुके हैं कि वो सब के सब गुनाह के मातहत हैं।

10 चुनाँचे लिखा है

“एक भी रास्तबाज़ नहीं।

11 कोई समझदार नहीं

कोई खुदा का तालिब नहीं।

12 सब गुमराह हैं सब के सब निकम्मे बन गए;

कोई भलाई करनेवाला नहीं एक भी नहीं।

13 उनका गला खुली हुई क्रब्र है

उन्होंने अपनी ज़बान से धोखा दिया

उन के होंटों में साँपों का ज़हर है।

14 उन का मुँह ला'नत और कड़वाहट से भरा है।

15 उन के क्रदम खून बहाने के लिए तेज़ी से बढ़ने वाले हैं।

16 उनकी राहों में तबाही और बदहाली है।

17 और वह सलामती की राह से वाकिफ़ न हुए।

18 उन की आँखों में खुदा का ख़ौफ़ नहीं।”

19 अब हम जानते हैं कि शरी'अत जो कुछ कहती है उनसे कहती है जो शरी'अत के मातहत हैं ताकि हर एक का मुँह बन्द हो जाए और सारी दुनिया खुदा के नज़दीक सज़ा के लायक ठहरे।

20 क्योंकि शरी'अत के अमल से कोई बशर उसके हज़ूर रास्तबाज़ नहीं ठहरेगी इसलिए कि शरी'अत के वसीले से तो गुनाह की पहचान हो सकती है।

21 मगर अब शरी'अत के बग़ैर खुदा की एक रास्तबाज़ी ज़ाहिर हुई है जिसकी गवाही शरी'अत और नबियों से होती है।

22 यानी खुदा की वो रास्तबाज़ी जो ईसा मसीह पर ईमान लाने से सब ईमान लानेवालों को हासिल होती है; क्योंकि कुछ फ़र्क नहीं।

23 इसलिए कि सब ने गुनाह किया और खुदा के जलाल से महरूम हैं।

24 मगर उसके फ़ज़ल की वजह से उस मख़लसी के वसीले से जो मसीह ईसा में है मुफ़्त रास्तबाज़ ठहराए जाते हैं।

25 उसे खुदा ने उसके खून के ज़रिए एक ऐसा कफ़ारा ठहराया जो ईमान लाने से फ़ाइदामन्द हो ताकि जो गुनाह पहले से हो चुके थे? और जिसे खुदा ने बर्दाश्त करके तरजीह दी थी उनके बारे में वो अपनी रास्तबाज़ी ज़ाहिर करे।

26 बल्कि इसी वक़्त उनकी रास्तबाज़ी ज़ाहिर हो ताकि वो खुद भी आदिल रहे और जो ईसा पर ईमान लाए उसको भी रास्तबाज़ ठहराने वाला हो।

27 पस फ़स्र कहाँ रहा? इसकी गुन्जाइश ही नहीं कौन सी शरी'अत की वजह से? क्या आमाल की शरी'अत से? ईमान की शरी'अत से?

28 चुनाँचे हम ये नतीजा निकालते हैं कि इंसान शरी'अत के आमाल के बग़ैर ईमान के ज़रिए से रास्तबाज़ ठहरता है।

29 क्या खुदा सिर्फ यहूदियों ही का है ग़ैर क्रौमों का नहीं? बेशक ग़ैर क्रौमों का भी है।

30 क्योंकि एक ही खुदा है मख्तूनों को भी ईमान से और नामख्तूनों को भी ईमान ही के वसीले से रास्तबाज़ ठहराएगा।

31 पस क्या हम शरी'अत को ईमान से बातिल करते हैं। हरगिज़ नहीं बल्कि शरी'अत को क़ाईम रखते हैं।

## 4

???????? ? ? ?

1 पस हम क्या कहें कि हमारे जिस्मानी बाप अब्रहाम को क्या हासिल हुआ?

2 क्योंकि अगर अब्रहाम आमाल से रास्तबाज़ ठहराया जाता तो उसको फ़ख़ की जगह होती; लेकिन खुदा के नज़दीक नहीं।

3 किताब ए मुक़द्दस क्या कहती है “ये कि अब्रहाम खुदा पर ईमान लाया। ये उसके लिए रास्तबाज़ी गिना गया।”

4 काम करनेवाले की मज़दूरी बख़्शिश नहीं बल्कि हक़ समझी जाती है।

5 मगर जो शख्स काम नहीं करता बल्कि बेदीन के रास्तबाज़ ठहराने वाले पर ईमान लाता है उस का ईमान उसके लिए रास्तबाज़ी गिना जाता है।

6 चुनाँचे जिस शख्स के लिए खुदा बग़ैर आमाल के रास्तबाज़ शुमार करता है दाऊद भी उसकी मुबारिक़ हाली इस तरह बयान करता है।

7 “मुबारिक़ वो हैं जिनकी बदकारियाँ मुआफ़ हुईं और जिनके गुनाह छुपाए गए।

8 मुबारिक़ वो शख्स है जिसके गुनाह खुदावन्द शुमार न करेगा।”

9 पस क्या ये मुबारिक्रवादी मख्तूनों ही के लिए है या नामख्तूनों के लिए भी? क्यूँकि हमारा दावा ये है कि अब्रहाम के लिए उसका ईमान रास्तबाज़ी गिना गया ।

10 पस किस हालत में गिना गया? मख्तूनी में या नामख्तूनी में? मख्तूनी में नहीं बल्कि नामख्तूनी में ।

11 और उसने खतने का निशान पाया कि उस ईमान की रास्तबाज़ी पर मुहर हो जाए जो उसे नामख्तूनी की हालत में हासिल था, वो उन सब का बाप ठहरे जो बावजूद नामख्तून होने के ईमान लाते हैं

12 और उन मख्तूनों का बाप हो जो न सिर्फ़ मख्तून हैं बल्कि हमारे बाप अब्रहाम के उस ईमान की भी पैरवी करते हैं जो उसे ना मख्तूनी की हालत में हासिल था ।

13 क्यूँकि ये वादा किया वो कि दुनिया का वारिस होगा न अब्रहाम से न उसकी नस्ल से शरी'अत के वसीले से किया गया था बल्कि ईमान की रास्तबाज़ी के वसीले से किया गया था ।

14 क्यूँकि अगर शरी'अत वाले ही वारिस हों तो ईमान बेफ़ाइदा रहा और वादा से कुछ हासिल न ठहरेगा ।

15 क्यूँकि शरी'अत तो ग़ज़ब पैदा करती है और जहाँ शरी'अत नहीं वहाँ मुखालिफ़त — ए — हुक्म भी नहीं ।

16 इसी वास्ते वो मीरास ईमान से मिलती है ताकि फ़ज़ल के तौर पर हो; और वो वादा कुल नस्ल के लिए काईम रहे सिर्फ़ उस नस्ल के लिए जो शरी'अत वाली है बल्कि उसके लिए भी जो अब्रहाम की तरह ईमान वाली है वही हम सब का बाप है ।

17 चुनाँचे लिखा है (“मैंने तुझे बहुत सी क्रौमों का बाप बनाया”) उस खुदा के सामने जिस पर वो ईमान लाया और जो मुर्दों को ज़िन्दा करता है और जो चीज़ें नहीं हैं उन्हें इस तरह से बुला लेता है कि गोया वो हैं ।

18 वो ना उम्मीदी की हालत में उम्मीद के साथ ईमान लाया ताकि इस क़ौल के मुताबिक़ कि तेरी नस्ल ऐसी ही होगी “वो बहुत सी क़ौमों का बाप हो।”

19 और वो जो तक़रीबन सौ बरस का था, बावजूद अपने मुर्दा से बदन और सारह के रहम की मुर्दाहालत पर लिहाज़ करने के ईमान में कमज़ोर न हुआ।

20 और न बे ईमान हो कर खुदा के वादे में शक़ किया बल्कि ईमान में मज़बूत हो कर खुदा की बड़ाई की।

21 और उसको कामिल ऐतिक़ाद हुआ कि जो कुछ उसने वादा किया है वो उसे पूरा करने पर भी कादिर है।

22 इसी वजह से ये उसके लिए रास्बाज़ी गिना गया।

23 और ये बात कि ईमान उस के लिए रास्तबाज़ी गिना गया; न सिर्फ़ उसके लिए लिखी गई।

24 बल्कि हमारे लिए भी जिनके लिए ईमान रास्तबाज़ी गिना जाएगा इस वास्ते के हम उस पर ईमान लाए हैं जिस ने हमारे खुदावन्द ईसा को मुर्दों में से जिलाया।

25 वो हमारे गुनाहों के लिए हवाले कर दिया गया और हम को रास्तबाज़ ठहराने के लिए जिलाया गया।

## 5

????? ?? ??????? ???????

1 पस जब हम ईमान से रास्तबाज़ ठहरे, तो खुदा के साथ अपने खुदावन्द ईसा मसीह के वसीले से सुलह रखें।

2 जिस के वसीले से ईमान की वजह से उस फ़ज़ल तक़ हमारी रिसाई भी हुई जिस पर काईम हैं और खुदा के जलाल की उम्मीद पर फ़ख़ करें।

3 और सिर्फ़ यही नहीं बल्कि मुसीबतों में भी फ़ख़ करें ये जानकर कि मुसीबत से सब्र पैदा होता है।

4 और सब्र से पुख्तगी और पुख्तगी से उम्मीद पैदा होती है।

5 और उम्मीद से शर्मिन्दगी हासिल नहीं होती क्योंकि रूह — उल — कुदूस जो हम को बख्शा गया है उसके वसीले से खुदा की मुहब्बत हमारे दिलों में डाली गई है।

6 क्योंकि जब हम कमज़ोर ही थे तो ऐ'न वक़्त पर मसीह बे'दीनों की खातिर मरा।

7 किसी रास्तबाज़ की खातिर भी मुश्किल से कोई अपनी जान देगा मगर शायद किसी नेक आदमी के लिए कोई अपनी जान तक दे देने की हिम्मत करे;

8 लेकिन खुदा अपनी मुहब्बत की खूबी हम पर यूँ ज़ाहिर करता है कि जब हम गुनाहगार ही थे, तो मसीह हमारी खातिर मरा।

9 पस जब हम उसके खून के ज़रिए अब रास्तबाज़ ठहरे तो उसके वसीले से ग़ज़ब 'ए इलाही से ज़रूर बचेंगे।

10 क्योंकि जब बावजूद दुश्मन होने के खुदा से उसके बेटे की मौत के वसीले से हमारा मेल हो गया तो मेल होने के बाद तो हम उसकी ज़िन्दगी की वजह से ज़रूर ही बचेंगे।

11 और सिर्फ़ यही नहीं बल्कि अपने खुदावन्द ईसा मसीह के तुफ़ैल से जिसके वसीले से अब हमारा खुदा के साथ मेल हो गया खुदा पर फ़ख़्र भी करते हैं।

12 पस जिस तरह एक आदमी की वजह से गुनाह दुनिया में आया और गुनाह की वजह से मौत आई और यूँ मौत सब आदमियों में फैल गई इसलिए कि सब ने गुनाह किया।

13 क्योंकि शरी'अत के दिए जाने तक दुनिया में गुनाह तो था मगर जहाँ शरी'अत नहीं वहाँ गुनाह शूमार नहीं होता।

14 तो भी आदम से लेकर मूसा तक मौत ने उन पर भी बादशाही की जिन्होंने उस आदम की नाफ़रमानी की तरह जो आनेवाले की मिसाल था गुनाह न किया था।

15 लेकिन गुनाह का जो हाल है वो फ़ज़ल की नेअ'मत का नहीं क्यूँकि जब एक शख्स के गुनाह से बहुत से आदमी मर गए तो खुदा का फ़ज़ल और उसकी जो बख़्शिश एक ही आदमी या'नी ईसा मसीह के फ़ज़ल से पैदा हुई और बहुत से आदमियों पर ज़रूर ही इफ़्रात से नाज़िल हुई।

16 और जैसा एक शख्स के गुनाह करने का अंजाम हुआ बख़्शिश का वैसा हाल नहीं क्यूँकि एक ही की वजह से वो फ़ैसला हुआ जिसका नतीजा सज़ा का हुक्म था; मगर बहुतेरे गुनाहों से ऐसी नेअ'मत पैदा हुई जिसका नतीजा ये हुआ कि लोग रास्तबाज़ ठहरें।

17 क्यूँकि जब एक शख्स के गुनाह की वजह से मौत ने उस एक के ज़रिए से बादशाही की तो जो लोग फ़ज़ल और रास्तबाज़ी की बख़्शिश इफ़्रात से हासिल करते हैं “वो एक शख्स या'नी ईसा” मसीह के वसीले से हमेशा की ज़िन्दगी में ज़रूर ही बादशाही करेंगे।

18 गरज़ जैसा एक गुनाह की वजह से वो फ़ैसला हुआ जिसका नतीजा सब आदमियों की सज़ा का हुक्म था; वैसे ही रास्तबाज़ी के एक काम के वसीले से सब आदमियों को वो ने'मत मिली जिससे रास्तबाज़ ठहराकर ज़िन्दगी पाएँ।

19 क्यूँकि जिस तरह एक ही शख्स की नाफ़रमानी से बहुत से लोग गुनाहगार ठहरे, उसी तरह एक की फ़रमाँबरदारी से बहुत से लोग रास्तबाज़ ठहरे।

20 और बीच में शरी'अत आ मौजूद हुई ताकि गुनाह ज़्यादा हो जाए मगर जहाँ गुनाह ज़्यादा हुआ फ़ज़ल उससे भी निहायत ज़्यादा हुआ।

21 ताकि जिस तरह गुनाह ने मौत की वजह से बादशाही की उसी तरह फ़ज़ल भी हमारे खुदावन्द ईसा मसीह के वसीले से

हमेशा की ज़िन्दगी के लिए रास्तबाज़ी के ज़रिए से बादशाही करे।

## 6

222222 22 22222 22222 22 22222 22

1 पस हम क्या कहें? क्या गुनाह करते रहें ताकि फ़ज़ल ज़्यादा हो?

2 हरगिज़ नहीं हम जो गुनाह के ऐ'तिबार से मर गए क्यूँकर उस में फिर से ज़िन्दगी गुज़ारें?

3 क्या तुम नहीं जानते कि हम जितनों ने मसीह ईसा में शामिल होने का बपतिस्मा लिया तो उस की मौत में शामिल होने का बपतिस्मा लिया?

4 पस मौत में शामिल होने के बपतिस्मे के वसीले से हम उसके साथ दफ़्न हुए ताकि जिस तरह मसीह बाप के जलाल के वसीले से मुर्दों में से जिलाया गया; उसी तरह हम भी नई ज़िन्दगी में चलें।

5 क्यूँकि जब हम उसकी मुशाबहत से उसके साथ जुड़ गए, तो बेशक उसके जी उठने की मुशाबहत से भी उस के साथ जुड़े होंगे।

6 चुनाँचे हम जानते हैं कि हमारी पूरानी इंसान ियत उसके साथ इसलिये मस्त्लूब की गई कि गुनाह का बदन बेकार हो जाए ताकि हम आगे को गुनाह की गुलामी में न रहें।

7 क्यूँकि जो मरा वो गुनाह से बरी हुआ।

8 पस जब हम मसीह के साथ मरे तो हमें यकीन है कि उसके साथ जिएँगे भी।

9 क्यूँकि ये जानते हैं कि मसीह जब मुर्दों में से जी उठा है तो फिर नहीं मरने का; मौत का फिर उस पर इस्त्रियार नहीं होने का।

10 क्यूँकि मसीह जो मरा गुनाह के ऐ'तिबार से एक बार मरा; मगर अब जो ज़िन्दा हुआ तो खुदा के ऐ'तिबार से ज़िन्दा है।

11 इसी तरह तुम भी अपने आपको गुनाह के ऐतिबार से मुर्दा; मगर खुदा के ऐतिबार से मसीह ईसा में ज़िन्दा समझो।

12 पस गुनाह तुम्हारे फ़ानी बदन में बादशाही न करे; कि तुम उसकी ख़्वाहिशों के ताबे रहो।

13 और अपने आज़ा नारास्ती के हथियार होने के लिए गुनाह के हवाले न करो; बल्कि अपने आपको मुर्दों में से ज़िन्दा जानकर खुदा के हवाले करो और अपने आज़ा रास्तबाज़ी के हथियार होने के लिए खुदा के हवाले करो।

14 इसलिए कि गुनाह का तुम पर इस्त्रियार न होगा; क्योंकि तुम शरी'अत के मातहत नहीं बल्कि फ़ज़ल के मातहत हो।

15 पस क्या हुआ? क्या हम इसलिए गुनाह करें कि शरी'अत के मातहत नहीं बल्कि फ़ज़ल के मातहत हैं? हरगिज़ नहीं;

16 क्या तुम नहीं जानते, कि जिसकी फ़रमाँबरदारी के लिए अपने आप को गुलामों की तरह हवाले कर देते हो, उसी के गुलाम हो जिसके फ़रमाँबरदार हो चाहे गुनाह के जिसका अंजाम मौत है चाहे फ़रमाँबरदारी के जिस का अंजाम रास्तबाज़ी है?

17 लेकिन खुदा का शुक्र है कि अगरचे तुम गुनाह के गुलाम थे तोभी दिल से उस ता'लीम के फ़रमाँबरदार हो गए; जिसके साँचे में ढाले गए थे।

18 और गुनाह से आज़ाद हो कर रास्तबाज़ी के गुलाम हो गए।

19 मैं तुम्हारी इंसानी कमज़ोरी की वजह से इंसानी तौर पर कहता हूँ; जिस तरह तुम ने अपने आज़ा बदकारी करने के लिए नापाकी और बदकारी की गुलामी के हवाले किए थे उसी तरह अब अपने आज़ा पाक होने के लिए रास्तबाज़ी की गुलामी के हवाले कर दो।

20 क्योंकि जब तुम गुनाह के गुलाम थे, तो रास्तबाज़ी के ऐतिबार से आज़ाद थे।

21 पस जिन बातों पर तुम अब शर्मिन्दा हो उनसे तुम उस वक़्त क्या फल पाते थे? क्यूँकि उन का अंजाम तो मौत है।

22 मगर अब गुनाह से आज़ाद और खुदा के गुलाम हो कर तुम को अपना फल मिला जिससे पाकीज़गी हासिल होती है और इस का अंजाम हमेशा की ज़िन्दगी है।

23 क्यूँकि गुनाह की मज़दूरी मौत है मगर खुदा की बख़्शीश हमारे खुदावन्द ईसा मसीह में हमेशा की ज़िन्दगी है।

## 7

?????? ???? ???? ?? ???? ???? ???? ???? ??

1 ऐ भाइयों, क्या तुम नहीं जानते में उन से कहता हूँ जो शरी'अत से वाकिफ़ हैं कि जब तक आदमी जीता है उसी वक़्त तक शरी'अत उस पर इस्तिवार रखती है?

2 चुनाँचे जिस औरत का शौहर मौजूद है वो शरी'अत के मुवाफ़िक़ अपने शौहर की ज़िन्दगी तक उसके बन्द में है; लेकिन अगर शौहर मर गया तो वो शौहर की शरी'अत से छूट गई।

3 पस अगर शौहर के जीते जी दूसरे मर्द की हो जाए तो ज़ानिया कहलाएगी लेकिन अगर शौहर मर जाए तो वो उस शरी'अत से आज़ाद है; यहाँ तक कि अगर दुसरे मर्द की हो भी जाए तो ज़ानिया न ठहरेगी।

4 पस ऐ मेरे भाइयों; तुम भी मसीह के बदन के वसीले से शरी'अत के ऐ'तिबार से इसलिए मुर्दा बन गए, कि उस दूसरे के हो; जाओ जो मुर्दों में से जिलाया गया ताकि हम सब खुदा के लिए फल पैदा करें।

5 क्यूँकि जब हम जिस्मानी थे गुनाह की ख्वाहिशों जो शरी'अत के ज़रिए पैदा होती थीं मौत का फल पैदा करने के लिए हमारे आ'ज़ा में तासीर करती थी।

6 लेकिन जिस चीज़ की क़ैद में थे उसके ऐ'तिबार से मर कर अब हम शरी'अत से ऐसे छूट गए, कि रूह के नए तौर पर न कि लफ़्ज़ों के पुराने तौर पर ख़िदमत करते हैं।

7 पस हम क्या करें क्या शरी'अत गुनाह है? हरगिज़ नहीं बल्कि बग़ैर शरी'अत के मैं गुनाह को न पहचानता मसलन अगर शरी'अत ये न कहती कि तू लालच न कर तो मैं लालच को न जानता।

8 मगर गुनाह ने मौक़ा पाकर हुक्म के ज़रिए से मुझे में हर तरह का लालच पैदा कर दिया; क्यूँकि शरी'अत के बग़ैर गुनाह मुर्दा है।

9 एक ज़माने में शरी'अत के बग़ैर मैं ज़िन्दा था, मगर अब हुक्म आया तो गुनाह ज़िन्दा हो गया और मैं मर गया।

10 और जिस हुक्म की चाहत ज़िन्दगी थी, वही मेरे हक़ में मौत का ज़रिया बन गया।

11 क्यूँकि गुनाह ने मौक़ा पाकर हुक्म के ज़रिए से मुझे बहकाया और उसी के ज़रिए से मुझे मार भी डाला।

12 पस शरी'अत पाक है और हुक्म भी पाक और रास्ता भी अच्छा है।

13 पस जो चीज़ अच्छी है क्या वो मेरे लिए मौत ठहरी? हरगिज़ नहीं बल्कि गुनाह ने अच्छी चीज़ के ज़रिए से मेरे लिए मौत पैदा करके मुझे मार डाला ताकि उसका गुनाह होना ज़ाहिर हो; और हुक्म के ज़रिए से गुनाह हद से ज़्यादा मकरूह मा'लूम हो।

14 क्या हम जानते हैं कि शरी'अत तो रूहानी है मगर मैं जिस्मानी और गुनाह के हाथ बिका हुआ हूँ।

15 और जो मैं करता हूँ उसको नहीं जानता क्यूँकि जिसका मैं इरादा करता हूँ वो नहीं करता बल्कि जिससे मुझे नफ़रत है वही करता हूँ।

16 और अगर मैं उस पर अमल करता हूँ जिसका इरादा नहीं करता तो मैं मानता हूँ कि शरी'अत उम्दा है।

17 पस इस सूरत में उसका करने वाला मैं न रहा बल्कि गुनाह है जो मुझ में बसा हुआ है।

18 क्योंकि मैं जानता हूँ कि मुझ में या'नी मेरे जिस्म में कोई नेकी बसी हुई नहीं; अलबत्ता इरादा तो मुझ में मौजूद है, मगर नेक काम मुझ में बन नहीं पड़ते।

19 चुनाँचे जिस नेकी का इरादा करता हूँ वो तो नहीं करता मगर जिस बदी का इरादा नहीं करता उसे कर लेता हूँ।

20 पस अगर मैं वो करता हूँ जिसका इरादा नहीं करता तो उसका करने वाला मैं न रहा बल्कि गुनाह है; जो मुझ में बसा हुआ है।

21 गरज़ मैं ऐसी शरी'अत पाता हूँ कि जब नेकी का इरादा करता हूँ तो बदी मेरे पास आ मौजूद होती है।

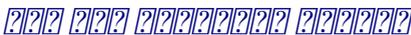
22 क्योंकि बातिनी इंसान ियत के ऐतबार से तो मैं खुदा की शरी'अत को बहुत पसन्द करता हूँ।

23 मगर मुझे अपने आ'ज़ा में एक और तरह की शरी'अत नज़र आती है जो मेरी अक्ल की शरी'अत से लड़कर मुझे उस गुनाह की शरी'अत की कैद में ले आती है; जो मेरे आ'ज़ा में मौजूद है।

24 हाय मैं कैसा कम्बख्त आदमी हूँ इस मौत के बदन से मुझे कौन छुड़ाएगा?

25 अपने खुदावन्द ईसा मसीह के वासीले से खुदा का शुक्र करता हूँ; गरज़ मैं खुद अपनी अक्ल से तो खुदा की शरी'अत का मगर जिस्म से गुनाह की शरी'अत का गुलाम हूँ।

## 8



1 पस अब जो मसीह ईसा में है उन पर सज़ा का हुक्म नहीं क्योंकि जो जिस्म के मुताबिक़ नहीं बल्कि रूह के मुताबिक़ चलते हैं?

2 क्योंकि ज़िन्दगी की पाक रूह को शरी'अत ने मसीह ईसा में मुझे गुनाह और मौत की शरी'अत से आज़ाद कर दिया।

3 इसलिए कि जो काम शरी'अत जिस्म की वजह से कमज़ोर हो कर न कर सकी वो खुदा ने किया; या'नी उसने अपने बेटे को गुनाह आलूदा जिस्म की सूरत में और गुनाह की कुर्बानी के लिए भेज कर जिस्म में गुनाह की सज़ा का हुक्म दिया।

4 ताकि शरी'अत का तक्राज़ा हम में पूरा हो जो जिस्म के मुताबिक़ नहीं बल्कि रूह के मुताबिक़ चलता है।

5 क्योंकि जो जिस्मानी है वो जिस्मानी बातों के खयाल में रहते हैं; लेकिन जो रूहानी हैं वो रूहानी बातों के खयाल में रहते हैं।

6 और जिस्मानी नियत मौत है मगर रूहानी नियत ज़िन्दगी और इत्मीनान है।

7 इसलिए कि जिस्मानी नियत खुदा की दुश्मन है क्योंकि न तो खुदा की शरी'अत के ताबे है न हो सकती है।

8 और जो जिस्मानी है वो खुदा को खुश नहीं कर सकते।

9 लेकिन तुम जिस्मानी नहीं बल्कि रूहानी हो बशर्ते कि खुदा का रूह तुम में बसा हुआ है; मगर जिस में मसीह का रूह नहीं वो उसका नहीं।

10 और अगर मसीह तुम में है तो बदन तो गुनाह की वजह से मुर्दा है मगर रूह रास्तबाज़ी की वजह से ज़िन्दा है।

11 और अगर उसी का रूह तुम्हें बसा हुआ है जिसने ईसा को मुर्दों में से जिलाया; वो जिसने मसीह को मुर्दों में से जिलाया, तुम्हारे फ़ानी बदनो को भी अपने उस रूह के वसीले से ज़िन्दा करेगा जो तुम में बसा हुआ है।

12 पस ऐ भाइयों! हम क्रर्जदार तो हैं मगर जिस्म के नहीं कि जिस्म के मुताबिक ज़िन्दगी गुज़ारें।

13 क्यूँकि अगर तुम जिस्म के मुताबिक ज़िन्दगी गुज़ारोगे तो ज़रूर मरोगे; और अगर रूह से बदन के कामों को नेस्तोनाबूद करोगे तो जीते रहोगे।

14 क्योँकी जो भी खुदा की रूह के मुताबक चलाए जाते हैं, वो खुदा के फ़र्ज़न्द हैं।

15 क्यूँकि तुम को गुलामी की रूह नहीं मिली जिससे फिर डर पैदा हो बल्कि लेपालक होने की रूह मिली जिस में हम अब्बा या'नी ऐ बाप कह कर पुकारते हैं।

16 पाक रूह हमारी रूह के साथ मिल कर गवाही देता है कि हम खुदा के फ़र्ज़न्द हैं।

17 और अगर फ़र्ज़न्द हैं तो वारिस भी हैं या'नी खुदा के वारिस और मसीह के हम मीरास बशर्ते कि हम उसके साथ दुःख उठाएँ ताकि उसके साथ जलाल भी पाएँ।

18 क्यूँकि मेरी समझ में इस ज़माने के दुःख दर्द इस लायक नहीं कि उस जलाल के मुक़ाबिले में हो सकें जो हम पर ज़ाहिर होने वाला है।

19 क्यूँकि मख़्लूकात पूरी आरजू से खुदा के बेटों के ज़ाहिर होने की राह देखती है।

20 इसलिए कि मख़्लूकात बतालत के इख़्तियार में कर दी गई थी न अपनी खुशी से बल्कि उसके ज़रिए से जिसने उसको।

21 इस उम्मीद पर बतालत के इख़्तियार कर दिया कि मख़्लूकात भी फ़ना के क़ब्ज़े से छूट कर खुदा के फ़र्ज़न्दों के जलाल की आज़ादी में दाख़िल हो जाएगी।

22 क्यूँकि हम को मा'लूम है कि सारी मख़्लूकात मिल कर अब तक कराहती है और दर्द — ए — ज़ेह में पड़ी तड़पती है।

23 और न सिर्फ़ वही बल्कि हम भी जिन्हें रूह के पहले फल मिले हैं आप अपने बातिन में कराहते हैं और लेपालक होने या'नी अपने बदन की मख़लसी की राह देखते हैं।

24 चुनाँचे हमें उम्मीद के वसीले से नजात मिली मगर जिस चीज़ की उम्मीद है जब वो नज़र आ जाए तो फिर उम्मीद कैसी? क्योंकि जो चीज़ कोई देख रहा है उसकी उम्मीद क्या करेगा?

25 लेकिन जिस चीज़ को नहीं देखते अगर हम उसकी उम्मीद करें तो सब्र से उसकी राह देखते रहें।

26 इसी तरह रूह भी हमारी कमज़ोरी में मदद करता है क्योंकि जिस तौर से हम को दुआ करना चाहिए हम नहीं जानते मगर रूह खुद ऐसी आहें भर भर कर हमारी शफ़ा'अत करता है जिनका बयान नहीं हो सकता।

27 और दिलों का परखने वाला जानता है कि रूह की क्या नियत है; क्योंकि वो खुदा की मर्ज़ी के मुवाफ़िक़ मुक़द्दसों की शफ़ा'अत करता है।

28 और हम को मा'लूम है कि सब चीज़ें मिल कर खुदा से मुहब्बत रखनेवालों के लिए भलाई पैदा करती है; या'नी उनके लिए जो खुदा के इरादे के मुवाफ़िक़ बुलाए गए।

29 क्योंकि जिनको उसने पहले से जाना उनको पहले से मुक़र्रर भी किया कि उसके बेटे के हमशक्ल हों, ताकि वो बहुत से भाइयों में पहलौठा ठहरे।

30 और जिन को उसने पहले से मुक़र्रर किया उनको बुलाया भी; और जिनको बुलाया उनको रास्तबाज़ भी ठहराया, और जिनको रास्तबाज़ ठहराया; उनको जलाल भी बरूशा।

31 पस हम इन बातों के बारे में क्या कहें? अगर खुदा हमारी तरफ़ है; तो कौन हमारा मुख़ालिफ़ है?

32 जिसने अपने बेटे ही की परवाह न की? बल्कि हम सब की खातिर उसे हवाले कर दिया वो उसके साथ और सब चीज़ें भी हमें

किस तरह न बख़्शेगा।

33 खुदा के बरगुज़ीदों पर कौन शिकायत करेगा? खुदा वही है जो उनको रास्तबाज़ ठहराता है।

34 कौन है जो मुजरिम ठहराएगा? मसीह ईसा वो है जो मर गया बल्कि मुर्दों में से जी उठा और खुदा की दहनी तरफ़ है और हमारी शिफ़ा'अत भी करता है।

35 कौन हमें मसीह की मुहब्बत से जुदा करेगा? मुसीबत या तंगी या जुल्म या काल या नंगापन या ख़तरा या तलवार।

36 चुनाँचे लिखा है “हम तेरी ख़ातिर दिन भर जान से मारे जाते हैं; हम तो ज़बह होने वाली भेड़ों के बराबर गिने गए।”

37 मगर उन सब हालतों में उसके वसीले से जिसने हम सब से मुहब्बत की हम को जीत से भी बढ़कर ग़लबा हासिल होता है।

38 क्योंकि मुझे यकीन है कि खुदा की जो मुहब्बत हमारे खुदावन्द ईसा मसीह में है उससे हम को न मौत जुदा कर सकेगी न ज़िन्दगी,

39 न फ़रिश्ते, न हुकूमतें, न मौजूदा, न आने वाली चीज़ें, न कुदरत, न ऊँचाई, न गहराई, न और कोई मख़्लूक।

## 9

????? ?? ?????????? ?? ???????

1 मैं मसीह में सच कहता हूँ, झूठ नहीं बोलता, और मेरा दिल भी रूह — उल — कुदूस में इस की गवाही देता है

2 कि मुझे बड़ा ग़म है और मेरा दिल बराबर दुःखता रहता है।

3 क्योंकि मुझे यहाँ तक मंज़ूर होता कि अपने भाइयों की ख़ातिर जो जिस्म के ऐतबार से मेरे करीबी हैं मैं खुद मसीह से महरूम हो जाता।

4 वो इस्राईल हैं, और लेपालक होने का हक़ और जलाल और ओहदा और शरी'अत और इबादत और वा'दे उन ही के हैं।

5 और क्रौम के बुजुर्ग उन ही के हैं और जिस्म के ऐतबार से मसीह भी उन ही में से हुआ, जो सब के ऊपर और हमेशा तक खुदा'ए महमूद है; आमीन।

6 लेकिन ये बात नहीं कि खुदा का कलाम बातिल हो गया इसलिए कि जो इस्राईल की औलाद हैं वो सब इस्राईली नहीं।

7 और न अब्रहाम की नस्ल होने की वजह से सब फ़र्ज़न्द ठहरे बल्कि ये लिखा है; “कि इज़्हाक ही से तेरी नस्ल कहलाएगी।”

8 या'नी कि जिस्मानी फ़र्ज़न्द खुदा के फ़र्ज़न्द नहीं बल्कि वा'दे के फ़र्ज़न्द नस्ल गिने जाते हैं।

9 क्यूँकि वा'दे का क्रौल ये है “मैं इस वक़्त के मुताबिक़ आऊँगा और सारा के बेटा होगा।”

10 और सिर्फ़ यही नहीं बल्कि रबेका भी एक शख्स या'नी हमारे बाप इज़्हाक से हैमिला थी।

11 और अभी तक न तो लड़के पैदा हुए थे और न उन्होंने नेकी या बदी की थी, कि उससे कहा गया, बड़ा छोटे की ख़िदमत करेगा।

12 ताकि खुदा का इरादा जो चुनाव पर मुन्हसिर है “आ'माल पर म्बनी न ठहरे बल्कि बुलानेवाले पर।”

13 चुनाँचे लिखा है “मैंने याकूब से तो मुहब्बत की मगर ऐसों को नापसन्द।”

14 पस हम क्या कहें? क्या खुदा के यहाँ बे'इन्साफ़ी है? हरगिज़ नहीं;

15 क्यूँकि वो मूसा से कहता है “जिस पर रहम करना मंज़ूर है और जिस पर तरस खाना मंज़ूर है उस पर तरस खाऊँगा।”

16 पर ये न इरादा करने वाले पर मुन्हसिर है न दौड़ धूप करने वाले पर बल्कि रहम करने वाले खुदा पर।

17 क्यूँकि किताब — ए — मुक़द्दस में खुदा ने फिर'औन से कहा “मैंने इसी लिए तुझे खड़ा किया है कि तेरी वजह से अपनी कुदरत

ज़ाहिर करूँ, और मेरा नाम तमाम रू'ए ज़मीन पर मशहूर हो।”

18 पर वो जिस पर चाहता है रहम करता है, और जिसे चाहता है उसे सख्त करता है।

19 पर तू मुझ से कहेगा, “फिर वो क्यूँ ऐब लगाता है? कौन उसके इरादे का मुक्काबिला करता है?”

20 ऐ' इंसान, भला तू कौन है जो खुदा के सामने जवाब देता है? क्या बनी हुई चीज़ बनाने वाले से कह सकती है “तूने मुझे क्यूँ ऐसा बनाया?”

21 क्या कुम्हार को मिट्टी पर इस्त्रियार नहीं? कि एक ही लौन्दे में से एक बरतन इज़्ज़त के लिए बनाए और दूसरा बे'इज़्ज़ती के लिए?

22 पस क्या त'अज्जुब है अगर खुदा अपना ग़ज़ब ज़ाहिर करने और अपनी कुदरत ज़ाहिर करने के इरादे से ग़ज़ब के बरतनों के साथ जो हलाकत के लिए तैयार हुए थे, निहायत तहम्मिल से पैश आए।

23 और ये इसलिए हुआ कि अपने जलाल की दौलत रहम के बरतनों के ज़रिए से ज़ाहिर करे जो उस ने जलाल के लिए पहले से तैयार किए थे।

24 या'नी हमारे ज़रिए से जिनको उसने न सिर्फ़ यहूदियों में से बल्कि ग़ैर क्रौमों में से भी बुलाया।

25 चुनाँचे होसे की किताब में भी खुदा यूँ फ़रमाता है,  
“जो मेरी उम्मत नहीं थी उसे अपनी उम्मत कहूँगा”  
और जो प्यारी न थी उसे प्यारी कहूँगा।

26 और ऐसा होगा कि जिस जगह उनसे ये कहा गया था कि तुम मेरी उम्मत नहीं हो,  
उसी जगह वो ज़िन्दा खुदा के बेटे कहलाएँगे।”

27 और यसायाह इस्राईल के बारे में पुकार कर कहता है चाहे बनी इस्राईल का शुमार समुन्दर की रेत के बराबर हो तोभी उन में से थोड़े ही बचेंगे।

28 क्योंकि खुदावन्द अपने कलाम को मुकम्मल और खत्म करके उसके मुताबिक ज़मीन पर अमल करेगा।

29 चुनाँचे यसायाह ने पहले भी कहा है कि अगर रब्बुल अफ़वाज हमारी कुछ नस्ल बाक़ी न रखता तो हम सदूम की तरह और अमूरा के बराबर हो जाते।

30 पस हम क्या कहें? ये कि ग़ैर क़ौमों ने जो रास्तबाज़ी की तलाश न करती थीं, रास्तबाज़ी हासिल की या'नी वो रास्तबाज़ी जो ईमान से है।

31 मगर इस्राईल जो रास्बाज़ी की शरी'अत तक न पहुँचा।

32 किस लिए? इस लिए कि उन्होंने ईमान से नहीं बल्कि गोया आ'माल से उसकी तलाश की; उन्होंने उसे ठोकर खाने के पत्थर से ठोकर खाई।

33 चुनाँचे लिखा है देखो; "मैं सिय्यून में ठेस लगने का पत्थर और ठोकर खाने की चट्टान रखता हूँ

और जो उस पर ईमान लाएगा वो शर्मिन्दा न होगा।"

## 10

1 ऐ भाइयों; मेरे दिल की आरजू और उन के लिए खुदा से मेरी दुआ है कि वो नजात पाएँ।

2 क्योंकि मैं उनका गवाह हूँ कि वो खुदा के बारे में ग़ैरत तो रखते हैं; मगर समझ के साथ नहीं।

3 इसलिए कि वो खुदा की रास्तबाज़ी से नावाक्रिफ़ हो कर और अपनी रास्तबाज़ी क़ाईम करने की कोशिश करके खुदा की रास्तबाज़ी के ताबे न हुए।

4 क्योंकि हर एक ईमान लानेवाले की रास्तबाज़ी के लिए मसीह शरी'अत का अंजाम है।

????? ?????? ?????? ??

5 चुनाँचे मूसा ने ये लिखा है “कि जो शख्स उस रास्तबाज़ी पर अमल करता है जो शरी'अत से है वो उसी की वजह से ज़िन्दा रहेगा।”

6 अगर जो रास्तबाज़ी ईमान से है वो यूँ कहती है, “तू अपने दिल में ये न कह कि आसमान पर कौन चढ़ेगा?” या'नी मसीह के उतार लाने को।

7 या “गहराव में कौन उतरेगा?” यानी मसीह को मुर्दों में से जिला कर ऊपर लाने को।

8 बल्कि क्या कहती है;

ये कि कलाम तेरे नज़दीक है

बल्कि तेरे मुँह और तेरे दिल में है कि,

ये वही ईमान का कलाम है जिसका हम ऐलान करते हैं।

9 कि अगर तू अपनी ज़बान से ईसा के खुदावन्द होने का इक्रार करे और अपने दिल से ईमान लाए कि खुदा ने उसे मुर्दों में से जिलाया तो नजात पाएगा।

10 क्योंकि रास्तबाज़ी के लिए ईमान लाना दिल से होता है और नजात के लिए इक्रार मुँह से किया जाता है।

11 चुनाँचे किताब — ए — मुक़द्दस ये कहती है “जो कोई उस पर ईमान लाएगा वो शर्मिन्दा न होगा।”

12 क्योंकि यहूदियों और यूनानियों में कुछ फ़र्क नहीं इसलिए कि वही सब का खुदावन्द है और अपने सब दुआ करनेवालों के लिए फ़य्याज़ है।

13 क्योंकि “जो कोई खुदावन्द का नाम लेगा नजात पाएगा।”

14 मगर जिस पर वो ईमान नहीं लाए उस से क्यूँकर दुआ करें? और जिसका जिक्र उन्होंने सुना नहीं उस पर ईमान क्यूँ लाएँ? और बगैर ऐलान करने वाले की क्यूँकर सुनें?

15 और जब तक वो भेजे न जाएँ ऐलान क्यूँकर करें? चुनाँचे लिखा है “क्या ही खुशनुमा हैं उनके कदम जो अच्छी चीज़ों की खुशखबरी देते हैं।”

16 लेकिन सब ने इस खुशखबरी पर कान न धरा चुनाँचे यसायाह कहता है “ऐ खुदावन्द हमारे पैग़ाम का किसने यकीन किया है?”

17 पस ईमान सुनने से पैदा होता है और सुनना मसीह के कलाम से।

18 लेकिन मैं कहता हूँ, क्या उन्होंने नहीं सुना? चुनाँचे लिखा है, “उनकी आवाज़ तमाम रूँए ज़मीन पर और उनकी बातें दुनिया की इन्तिहा तक पहुँची”।

19 फिर मैं कहता हूँ, क्या इस्राईल वाक़िफ़ न था? पहले तो मूसा कहता है,

“उन से तुम को ग़ैरत दिलाऊँगा जो क्रौम ही नहीं एक नादान क्रौम से तुम को गुस्सा दिलाऊँगा।”

20 फिर यसायाह बड़ा दिलेर होकर ये कहता है जिन्होंने मुझे नहीं ढूँडा उन्होंने मुझे पा लिया जिन्होंने मुझ से नहीं पूछा उन पर मैं ज़ाहिर हो गया।

21 लेकिन इस्राईल के हक़ में यूँ कहता है “मैं दिन भर एक नाफ़रमान और हुज्जती उम्मत की तरफ़ अपने हाथ बढ़ाए रहा।”

## 11



1 पस मैं कहता हूँ क्या खुदा ने अपनी उम्मत को रद्द कर दिया? हरगिज़ नहीं क्योंकि मैं भी इस्राईली अब्रहाम की नस्ल और बिनयामीन के कबीले में से हूँ।

2 खुदा ने अपनी उस उम्मत को रद्द नहीं किया जिसे उसने पहले से जाना क्या तुम नहीं जानते कि किताब — ए — मुकद्दस एलियाह के ज़िक्र में क्या कहती है; कि वो खुदा से इस्राईल की यूँ फ़रियाद करता है?

3 “ऐ खुदावन्द उन्होंने तेरे नबियों को कत्ल किया और तेरी कुरबानगाहों को ढा दिया; अब मैं अकेला बाक़ी हूँ और वो मेरी जान के भी पीछे हैं।”

4 मगर जवाब 'ए' इलाही उसको क्या मिला? ये कि मैंने “अपने लिए सात हज़ार आदमी बचा रखे हैं जिन्होंने बा'ल के आगे घुटने नहीं टेके।”

5 पस इसी तरह इस वक़्त भी फ़ज़ल से बरगुज़ीदा होने के ज़रिए कुछ बाक़ी हैं।

6 और अगर फ़ज़ल से बरगुज़ीदा हैं तो आ'माल से नहीं; वर्ना फ़ज़ल फ़ज़ल न रहा।

7 पस नतीजा क्या हुआ? ये कि इस्राईल जिस चीज़ की तलाश करता है वो उस को न मिली मगर बरगुज़ीदों को मिली और बाक़ी सख्त किए गए।

8 चुनाँचे लिखा है, खुदा ने उनको आज के दिन तक सुस्त तबी'अत दी और ऐसी आँखें जो न देखें और ऐसे कान जो न सुनें।

9 और दाऊद कहता है,  
उनका दस्तरख्वान उन के लिए जाल और फ़न्दा  
और ठोकर खाने और सज़ा का ज़रिया बन जाए।

10 उन की आँखों पर अँधेरा छा जाए ताकि न देखें  
और तू उनकी पीठ हमेशा झुकाए रख।

11 पस मैं पूंछता हूँ क्या यहूदियों ने ऐसी ठोकर खाई कि गिर पड़े? हरगिज़ नहीं; बल्कि उनकी ग़लती से ग़ैर क्रौमों को नजात मिली ताकि उन्हें ग़ैरत आए।

12 पस जब उनका लड़खड़ाना दुनिया के लिए दौलत का ज़रिया और उनका घटना ग़ैर क्रौमों के लिए दौलत का ज़रिया हुआ तो उन का भरपूर होना ज़रूर ही दौलत का ज़रिया होगा।

13 मैं ये बातें तुम ग़ैर क्रौमों से कहता हूँ, चूँकि मैं ग़ैर क्रौमों का रसूल हूँ इसलिए अपनी ख़िदमत की बड़ाई करता हूँ।

14 ताकि किसी तरह से अपनी क्रौम वालों से ग़ैरत दिलाकर उन में से कुछ को नजात दिलाऊँ।

15 क्यूँकि जब उनका अलग हो जाना दुनिया के आ मिलने का ज़रिया हुआ तो क्या उन का मक़बूल होना मुर्दों में से जी उठने के बराबर न होगा?

16 जब नज़्र का पहला पेड़ा पाक ठहरा तो सारा गुंधा हुआ आटा भी पाक है, और जब जड़ पाक है तो डालियाँ भी पाक ही हैं।

17 लेकिन अगर कुछ डालियाँ तोड़ी गई, और तू जंगली ज़ैतून होकर उनकी जगह पैवन्द हुआ, और ज़ैतून की रौगनदार जड़ में शरीक हो गया।

18 तो तू उन डालियों के मुक़ाबिले में फ़स्र न कर और अगर फ़स्र करेगा तो जान रख कि तू जड़ को नहीं बल्कि जड़ तुझ को संभालती है।

19 पस तू कहेगा, “डालियाँ इसलिए तोड़ी गईं कि मैं पैवन्द हो जाऊँ।”

20 अच्छा, वो तो बे'ईमानी की वजह से तोड़ी गई, और तू ईमान की वजह से क़ाईम है; पस मगरूर न हो बल्कि ख़ौफ़ कर।

21 क्यूँकि जब खुदा ने असली डालियों को न छोड़ा तो तुझ को भी न छोड़ेगा।

22 पस खुदा की महरबानी और सख्ती को देख सख्ती उन पर जो गिर गए हैं; और खुदा की महरबानी तुझ पर बशर्ते कि तू उस महरबानी पर क्राईम रहे, वना तू भी काट डाला जाएगा।

23 और वो भी अगर बेईमान न रहें तो पैवन्द किए जाएँगे क्योंकि खुदा उन्हें पैवन्द करके बहाल करने पर क्रादिर है।

24 इसलिए कि जब तू ज़ैतून के उस दरख्त से काट कर जिसकी जड़ ही जंगली है जड़ के बरखिलाफ़ अच्छे ज़ैतून में पैवन्द हो गया तो वो जो जड़ डालियाँ हैं अपने ज़ैतून में ज़रूर ही पैवन्द हो जाएँगी।

25 ऐ भाइयों! कहीं ऐसा न हो कि तुम अपने आपको अक्लमन्द समझ लो इसलिए में नहीं चाहता कि तुम इस राज़ से ना वाकिफ़ रहो कि इस्राईल का एक हिस्सा सख्त हो गया है और जब तक गैर क्रौमें पूरी पूरी दाखिल न हों वो ऐसा ही रहेगा।

26 और इस सूरत से तमाम इस्राईल नजात पाएगा; चुनाँचे लिखा है,

छुड़ाने वाला सिय्यून से निकलेगा  
और बेदीनी को या'कूब से दफ़ा करेगा।

27 “और उनके साथ मेरा ये अहद होगा  
जब कि मैं उनके गुनाहों को दूर करूँगा।”

28 इंजील के ऐ'तिबार से तो वो तुम्हारी खातिर दुश्मन हैं लेकिन बरगुज़ीदगी के ऐ'तिबार से बाप दादा की खातिर प्यार करें।

29 इसलिए कि खुदा की ने'अमत और बुलावा ना बदलने वाला है।

30 क्योंकि जिस तरह तुम पहले खुदा के नाफ़रमान थे मगर अब यहूदियों की नाफ़रमानी की वजह से तुम पर रहम हुआ।

31 उसी तरह अब ये भी नाफ़रमान हुए ताकि तुम पर रहम होने के ज़रिए अब इन पर भी रहम हो।

32 इसलिए कि खुदा ने सब को नाफ़रमानी में गिरफ़्तार होने दिया ताकि सब पर रहम फ़रमाए।

33 वाह! खुदा की दौलत और हिक्मत और इल्म क्या ही अज़ीम है उसके फ़ैसले किस क्रूर पहुँच से बाहर हैं और उसकी राहें क्या ही बे'निशान हैं।

34 खुदावन्द की अक्रल को किसने जाना?  
या कौन उसका सलाहकार हुआ?

35 या किसने पहले उसे कुछ दिया है,  
जिसका बदला उसे दिया जाए?

36 क्योंकि उसी की तरफ़ से, और उसी के वसीले से और उसी के लिए सब चीज़ें हैं; उसकी बड़ाई हमेशा तक होती रहे आमीन।

## 12

?????? ?? ????? ?? ????????? ???????????

1 ऐ भाइयों! मैं खुदा की रहमतें याद दिला कर तुम से गुज़ारिश करता हूँ कि अपने बदन ऐसी कुर्बानी होने के लिए पेश करो जो ज़िन्दा और पाक और खुदा को पसन्दीदा हो यही तुम्हारी मा'कूल इबादत है।

2 और इस जहान के हमशकल न बनो बल्कि अक्रल नई हो जाने से अपनी सूरत बदलते जाओ ताकि खुदा की नेक और पसन्दीदा और कामिल मर्ज़ी को तज़ुर्बा से मा'लूम करते रहो।

3 मैं उस तौफ़ीक़ की वजह से जो मुझ को मिली है तुम में से हर एक से कहता हूँ, कि जैसा समझना चाहिए उससे ज़्यादा कोई अपने आपको न समझे बल्कि जैसा खुदा ने हर एक को अन्दाज़े के मुवाफ़िक़ ईमान तक्रसीम किया है ऐ'तिदाल के साथ अपने आप को वैसा ही समझे।

4 क्योंकि जिस तरह हमारे एक बदन में बहुत से आ'ज़ा होते हैं और तमाम आ'ज़ा का काम एक जैसा नहीं।

5 उसी तरह हम भी जो बहुत से हैं मसीह में शामिल होकर एक बदन हैं और आपस में एक दूसरे के आ'जा।

6 और चूँकि उस तौफ़ीक़ के मुवाफ़िक़ जो हम को दी गई; हमें तरह तरह की ने'अमतेँ मिली इसलिए जिस को नबुव्वत मिली हो वो ईमान के अन्दाज़े के मुवाफ़िक़ नबुव्वत करें।

7 अगर ख़िदमत मिली हो तो ख़िदमत में लगा रहे अगर कोई मुअल्लिम हो तो ता'लीम में मशगूल हो।

8 और अगर नासेह हो तो नसीहत में, ख़ैरात बाँटने वाला सखावत से बाँटे, पेशवा सरगर्मी से पेशवाई करे, रहम करने वाला खुशी से रहम करे।

9 मुहब्बत बे 'रिया हो बदी से नफ़रत रक्खो नेकी से लिपटे रहो।

10 बिरादराना मुहब्बत से आपस में एक दूसरे को प्यार करो इज़्ज़त के ऐतबार से एक दूसरे को बेहतर समझो।

11 कोशिश में सुस्ती न करो रूहानी जोश में भरे रहो; खुदावन्द की ख़िदमत करते रहो।

12 उम्मीद में खुश मुसीबत में साबिर दुआ करने में मशगूल रहो।

13 मुक़द्दसों की ज़रूरतें पूरी करो।

14 जो तुम्हें सताते हैं उनके वास्ते बर्क़त चाहो ला'नत न करो।

15 खुशी करनेवालों के साथ खुशी करो रोने वालों के साथ रोओ।

16 आपस में एक दिल रहो ऊँचे ऊँचे ख़याल न बाँधो बल्कि छोटे लोगों से रिफ़ाक़त रक्खो अपने आप को अक्लमन्द न समझो।

17 बदी के बदले किसी से बदी न करो; जो बातें सब लोगों के नज़दीक अच्छी हैं उनकी तदबीर करो।

18 जहाँ तक हो सके तुम अपनी तरफ़ से सब आदमियों के साथ मेल मिलाप रक्खो।

19 “ऐ! अज़ीज़ो! अपना इन्तक़ाम न लो बल्कि ग़ज़ब को मौक़ा दो क्यूँकि ये लिखा है खुदावन्द फ़रमाता है इन्तक़ाम लेना मेरा काम है बदला मैं ही दूँगा।”

20 बल्कि अगर तेरा दुश्मन भूखा हो तो उस को खाना खिला “अगर प्यासा हो तो उसे पानी पिला क्यूँकि ऐसा करने से तू उसके सिर पर आग के अंगारों का ढेर लगाएगा।”

21 बदी से मग़लूब न हो बल्कि नेकी के ज़रिए से बदी पर ग़ालिब आओ।

## 13

?????????? ?? ????? ???????????

1 हर शख्स आ'ला हुकूमतों का ता'बेदार रहे क्यूँकि कोई हुकूमत ऐसी नहीं जो खुदा की तरफ़ से न हो और जो हुकूमतें मौजूद हैं वो खुदा की तरफ़ से मुकर्रर है।

2 पस जो कोई हुकूमत का सामना करता है वो खुदा के इन्तज़ाम का मुखालिफ़ है और जो मुखालिफ़ है वो सज़ा पाएगा।

3 नेक — ओ कारों को हाकिमों से ख़ौफ़ नहीं बल्कि बदकार को है, पस अगर तू हाकिम से निडर रहना चाहता है तो नेकी कर उसकी तरफ़ से तेरी तारीफ़ होगी।

4 क्यूँकि वो तेरी बेहतरी के लिए खुदा का ख़ादिम है लेकिन अगर तू बदी करे तो डर, क्यूँकि वो तलवार बे'फ़ाइदा लिए हुए नहीं और खुदा का ख़ादिम है कि उसके ग़ज़ब के मुवाफ़िक़ बदकार को सज़ा देता है

5 पस ताबे दार रहना न सिर्फ़ ग़ज़ब के डर से ज़रूर है बल्कि दिल भी यही गवाही देता है।

6 तुम इसी लिए लगान भी देते हो कि वो खुदा का ख़ादिम है और इस ख़ास काम में हमेशा मशग़ूल रहते हैं।

7 सब का हक़ अदा करो जिस को लगान चाहिए लगान दो, जिसको महसूल चाहिए महसूल जिससे डरना चाहिए उस से डरो, जिस की इज़्ज़त करना चाहिए उसकी इज़्ज़त करो।

8 आपस की मुहब्बत के सिवा किसी चीज़ में किसी के कर्ज़दार न हो क्यूँकि जो दूसरे से मुहब्बत रखता है उसने शरी'अत पर पूरा अमल किया।

9 क्यूँकि ये बातें कि ज़िना न कर, खून न कर, चोरी न कर, लालच न कर और इसके सिवा और जो कोई हुक़म हो उन सब का खुलासा इस बात में पाया जाता है “अपने पड़ोसी से अपनी तरह मुहब्बत रख।”

10 मुहब्बत अपने पड़ोसी से बदी नहीं करती इस वास्ते मुहब्बत शरी'अत की ता'मील है।

11 वक़्त को पहचानकर ऐसा ही करो इसलिए कि अब वो घड़ी आ पहुँची कि तुम नींद से जागो; क्यूँकि जिस वक़्त हम ईमान लाए थे उस वक़्त की निस्वत अब हमारी नजात नज़दीक है।

12 रात बहुत गुज़र गई, और दिन निकलने वाला है पस हम अंधेरे के कामों को तर्क करके रौशनी के हथियार बाँध लें।

13 जैसा दिन को दस्तूर है संजीदगी से चलें न कि नाच रंग और नशेबाज़ी से न ज़िनाकारी और शहवत परस्ती से और न झगड़े और हसद से।

14 बल्कि खुदावन्द ईसा मसीह को पहन लो और जिस्म की ख्वाहिशों के लिए तदबीरें न करो।

## 14

?? ???? ? ? ???? ?

1 कमज़ोर ईमान वालों को अपने में शामिल तो कर लो, मगर शक' और शुबह की तक़ारों के लिए नहीं।

2 हरएक का मानना है कि हर चीज़ का खाना जाएज़ है और कमज़ोर ईमानवाला साग पात ही खाता है।

3 खाने वाला उसको जो नहीं खाता हकीर न जाने और जो नहीं खाता वो खाने वाले पर इल्ज़ाम न लगाए; क्योंकि खुदा ने उसको कुबूल कर लिया है।

4 तू कौन है, जो दूसरे के नौकर पर इल्ज़ाम लगाता है? उसका क्राईम रहना या गिर पडना उसके मालिक ही से मुताल्लिक है; बल्कि वो क्राईम ही कर दिया जाए क्योंकि खुदावन्द उसके क्राईम करने पर क्रादिर है।

5 कोई तो एक दिन को दूसरे से अफ़ज़ल जानता है और कोई सब दिनों को बराबर जानता है हर एक अपने दिल में पूरा ऐतिकाद रखे।

6 जो किसी दिन को मानता है वो खुदावन्द के लिए मानता है और जो खाता है वो खुदावन्द के वास्ते खाता है क्योंकि वो खुदा का शुक्र करता है और जो नहीं खाता वो भी खुदावन्द के वास्ते नहीं खाता, और खुदावन्द का शुक्र करता है।

7 क्योंकि हम में से न कोई अपने वास्ते जीता है, न कोई अपने वास्ते मरता है।

8 अगर हम जीते हैं तो खुदावन्द के वास्ते जीते हैं और अगर मरते हैं तो खुदावन्द के वास्ते मरते हैं; पस हम जिएँ या मरें खुदावन्द ही के हैं।

9 क्योंकि मसीह इसलिए मरा और ज़िन्दा हुआ कि मुदों और ज़िन्दों दोनों का खुदावन्द हो।

10 मगर तू अपने भाई पर किस लिए इल्ज़ाम लगाता है? या तू भी किस लिए अपने भाई को हकीर जानता है? हम तो सब खुदा के तख्त — ए — अदालत के आगे खड़े होंगे।

11 चुनाँचे ये लिखा है; खुदावन्द फ़रमाता है मुझे अपनी हयात की क्रसम, हर एक घुटना मेरे आगे झुकेगा और हर एक ज़बान खुदा का इकरार करेगी।

12 पस हम में से हर एक खुदा को अपना हिसाब देगा।

13 पस आइन्दा को हम एक दूसरे पर इल्जाम न लगाएँ बल्कि तुम यही ठान लो कि कोई अपने भाई के सामने वो चीज़ न रखे जो उसके ठोकर खाने या गिरने का ज़रिया हो।

14 मुझे मा'लूम है बल्कि खुदावन्द ईसा में मुझे यकीन है कि कोई चीज़ बजाहित हराम नहीं लेकिन जो उसको हराम समझता है उस के लिए हराम है।

15 अगर तेरे भाई को तेरे खाने से रंज पहुँचता है तो फिर तू मुहब्बत के का'इदे पर नहीं चलता; जिस शख्स के वास्ते मसीह मरा तू अपने खाने से हलाक न कर।

16 पस तुम्हारी नेकी की बदनामी न हो।

17 क्योंकि खुदा की बादशाही खाने पीने पर नहीं बल्कि रास्तबाज़ी और मेल मिलाप और उस खुशी पर मौकूफ है जो रूह — उल — कुद्स की तरफ़ से होती है।

18 जो कोई इस तौर से मसीह की खिदमत करता है; वो खुदा का पसन्दीदा और आदमियों का मक़बूल है।

19 पस हम उन बातों के तालिब रहें; जिनसे मेल मिलाप और आपसी तरक्की हो।

20 खाने की खातिर खुदा के काम को न बिगाड़ हर चीज़ पाक तो है मगर उस आदमी के लिए बुरी है; जिसको उसके खाने से ठोकर लगती है।

21 यही अच्छा है कि तू न गोश्त खाए न मय पिए न और कुछ ऐसा करे जिस की वजह से तेरा भाई ठोकर खाए।

22 जो तेरा ऐ'तिक्राद है वो खुदा की नज़र में तेरे ही दिल में रहे, मुबारिक वो है जो उस चीज़ की वजह से जिसे वो जायज़ रखता है अपने आप को मुल्ज़िम नहीं ठहराता।

23 मगर जो कोई किसी चीज़ में शक रखता है अगर उस को खाए तो मुजरिम ठहरता है इस वास्ते कि वो ऐ'तिक्राद से नहीं खाता, और जो कुछ ऐ'तिक्राद से नहीं वो गुनाह है।

## 15

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १०० १०१ १०२ १०३ १०४ १०५ १०६ १०७ १०८ १०९ ११० १११ ११२ ११३ ११४ ११५ ११६ ११७ ११८ ११९ १२० १२१ १२२ १२३ १२४ १२५ १२६ १२७ १२८ १२९ १३० १३१ १३२ १३३ १३४ १३५ १३६ १३७ १३८ १३९ १४० १४१ १४२ १४३ १४४ १४५ १४६ १४७ १४८ १४९ १५० १५१ १५२ १५३ १५४ १५५ १५६ १५७ १५८ १५९ १६० १६१ १६२ १६३ १६४ १६५ १६६ १६७ १६८ १६९ १७० १७१ १७२ १७३ १७४ १७५ १७६ १७७ १७८ १७९ १८० १८१ १८२ १८३ १८४ १८५ १८६ १८७ १८८ १८९ १९० १९१ १९२ १९३ १९४ १९५ १९६ १९७ १९८ १९९ २०० २०१ २०२ २०३ २०४ २०५ २०६ २०७ २०८ २०९ २१० २११ २१२ २१३ २१४ २१५ २१६ २१७ २१८ २१९ २२० २२१ २२२ २२३ २२४ २२५ २२६ २२७ २२८ २२९ २३० २३१ २३२ २३३ २३४ २३५ २३६ २३७ २३८ २३९ २४० २४१ २४२ २४३ २४४ २४५ २४६ २४७ २४८ २४९ २५० २५१ २५२ २५३ २५४ २५५ २५६ २५७ २५८ २५९ २६० २६१ २६२ २६३ २६४ २६५ २६६ २६७ २६८ २६९ २७० २७१ २७२ २७३ २७४ २७५ २७६ २७७ २७८ २७९ २८० २८१ २८२ २८३ २८४ २८५ २८६ २८७ २८८ २८९ २९० २९१ २९२ २९३ २९४ २९५ २९६ २९७ २९८ २९९ ३०० ३०१ ३०२ ३०३ ३०४ ३०५ ३०६ ३०७ ३०८ ३०९ ३१० ३११ ३१२ ३१३ ३१४ ३१५ ३१६ ३१७ ३१८ ३१९ ३२० ३२१ ३२२ ३२३ ३२४ ३२५ ३२६ ३२७ ३२८ ३२९ ३३० ३३१ ३३२ ३३३ ३३४ ३३५ ३३६ ३३७ ३३८ ३३९ ३४० ३४१ ३४२ ३४३ ३४४ ३४५ ३४६ ३४७ ३४८ ३४९ ३५० ३५१ ३५२ ३५३ ३५४ ३५५ ३५६ ३५७ ३५८ ३५९ ३६० ३६१ ३६२ ३६३ ३६४ ३६५ ३६६ ३६७ ३६८ ३६९ ३७० ३७१ ३७२ ३७३ ३७४ ३७५ ३७६ ३७७ ३७८ ३७९ ३८० ३८१ ३८२ ३८३ ३८४ ३८५ ३८६ ३८७ ३८८ ३८९ ३९० ३९१ ३९२ ३९३ ३९४ ३९५ ३९६ ३९७ ३९८ ३९९ ४०० ४०१ ४०२ ४०३ ४०४ ४०५ ४०६ ४०७ ४०८ ४०९ ४१० ४११ ४१२ ४१३ ४१४ ४१५ ४१६ ४१७ ४१८ ४१९ ४२० ४२१ ४२२ ४२३ ४२४ ४२५ ४२६ ४२७ ४२८ ४२९ ४३० ४३१ ४३२ ४३३ ४३४ ४३५ ४३६ ४३७ ४३८ ४३९ ४४० ४४१ ४४२ ४४३ ४४४ ४४५ ४४६ ४४७ ४४८ ४४९ ४५० ४५१ ४५२ ४५३ ४५४ ४५५ ४५६ ४५७ ४५८ ४५९ ४६० ४६१ ४६२ ४६३ ४६४ ४६५ ४६६ ४६७ ४६८ ४६९ ४७० ४७१ ४७२ ४७३ ४७४ ४७५ ४७६ ४७७ ४७८ ४७९ ४८० ४८१ ४८२ ४८३ ४८४ ४८५ ४८६ ४८७ ४८८ ४८९ ४९० ४९१ ४९२ ४९३ ४९४ ४९५ ४९६ ४९७ ४९८ ४९९ ५०० ५०१ ५०२ ५०३ ५०४ ५०५ ५०६ ५०७ ५०८ ५०९ ५१० ५११ ५१२ ५१३ ५१४ ५१५ ५१६ ५१७ ५१८ ५१९ ५२० ५२१ ५२२ ५२३ ५२४ ५२५ ५२६ ५२७ ५२८ ५२९ ५३० ५३१ ५३२ ५३३ ५३४ ५३५ ५३६ ५३७ ५३८ ५३९ ५४० ५४१ ५४२ ५४३ ५४४ ५४५ ५४६ ५४७ ५४८ ५४९ ५५० ५५१ ५५२ ५५३ ५५४ ५५५ ५५६ ५५७ ५५८ ५५९ ५६० ५६१ ५६२ ५६३ ५६४ ५६५ ५६६ ५६७ ५६८ ५६९ ५७० ५७१ ५७२ ५७३ ५७४ ५७५ ५७६ ५७७ ५७८ ५७९ ५८० ५८१ ५८२ ५८३ ५८४ ५८५ ५८६ ५८७ ५८८ ५८९ ५९० ५९१ ५९२ ५९३ ५९४ ५९५ ५९६ ५९७ ५९८ ५९९ ६०० ६०१ ६०२ ६०३ ६०४ ६०५ ६०६ ६०७ ६०८ ६०९ ६१० ६११ ६१२ ६१३ ६१४ ६१५ ६१६ ६१७ ६१८ ६१९ ६२० ६२१ ६२२ ६२३ ६२४ ६२५ ६२६ ६२७ ६२८ ६२९ ६३० ६३१ ६३२ ६३३ ६३४ ६३५ ६३६ ६३७ ६३८ ६३९ ६४० ६४१ ६४२ ६४३ ६४४ ६४५ ६४६ ६४७ ६४८ ६४९ ६५० ६५१ ६५२ ६५३ ६५४ ६५५ ६५६ ६५७ ६५८ ६५९ ६६० ६६१ ६६२ ६६३ ६६४ ६६५ ६६६ ६६७ ६६८ ६६९ ६७० ६७१ ६७२ ६७३ ६७४ ६७५ ६७६ ६७७ ६७८ ६७९ ६८० ६८१ ६८२ ६८३ ६८४ ६८५ ६८६ ६८७ ६८८ ६८९ ६९० ६९१ ६९२ ६९३ ६९४ ६९५ ६९६ ६९७ ६९८ ६९९ ७०० ७०१ ७०२ ७०३ ७०४ ७०५ ७०६ ७०७ ७०८ ७०९ ७१० ७११ ७१२ ७१३ ७१४ ७१५ ७१६ ७१७ ७१८ ७१९ ७२० ७२१ ७२२ ७२३ ७२४ ७२५ ७२६ ७२७ ७२८ ७२९ ७३० ७३१ ७३२ ७३३ ७३४ ७३५ ७३६ ७३७ ७३८ ७३९ ७४० ७४१ ७४२ ७४३ ७४४ ७४५ ७४६ ७४७ ७४८ ७४९ ७५० ७५१ ७५२ ७५३ ७५४ ७५५ ७५६ ७५७ ७५८ ७५९ ७६० ७६१ ७६२ ७६३ ७६४ ७६५ ७६६ ७६७ ७६८ ७६९ ७७० ७७१ ७७२ ७७३ ७७४ ७७५ ७७६ ७७७ ७७८ ७७९ ७८० ७८१ ७८२ ७८३ ७८४ ७८५ ७८६ ७८७ ७८८ ७८९ ७९० ७९१ ७९२ ७९३ ७९४ ७९५ ७९६ ७९७ ७९८ ७९९ ८०० ८०१ ८०२ ८०३ ८०४ ८०५ ८०६ ८०७ ८०८ ८०९ ८१० ८११ ८१२ ८१३ ८१४ ८१५ ८१६ ८१७ ८१८ ८१९ ८२० ८२१ ८२२ ८२३ ८२४ ८२५ ८२६ ८२७ ८२८ ८२९ ८३० ८३१ ८३२ ८३३ ८३४ ८३५ ८३६ ८३७ ८३८ ८३९ ८४० ८४१ ८४२ ८४३ ८४४ ८४५ ८४६ ८४७ ८४८ ८४९ ८५० ८५१ ८५२ ८५३ ८५४ ८५५ ८५६ ८५७ ८५८ ८५९ ८६० ८६१ ८६२ ८६३ ८६४ ८६५ ८६६ ८६७ ८६८ ८६९ ८७० ८७१ ८७२ ८७३ ८७४ ८७५ ८७६ ८७७ ८७८ ८७९ ८८० ८८१ ८८२ ८८३ ८८४ ८८५ ८८६ ८८७ ८८८ ८८९ ८९० ८९१ ८९२ ८९३ ८९४ ८९५ ८९६ ८९७ ८९८ ८९९ ९०० ९०१ ९०२ ९०३ ९०४ ९०५ ९०६ ९०७ ९०८ ९०९ ९१० ९११ ९१२ ९१३ ९१४ ९१५ ९१६ ९१७ ९१८ ९१९ ९२० ९२१ ९२२ ९२३ ९२४ ९२५ ९२६ ९२७ ९२८ ९२९ ९३० ९३१ ९३२ ९३३ ९३४ ९३५ ९३६ ९३७ ९३८ ९३९ ९४० ९४१ ९४२ ९४३ ९४४ ९४५ ९४६ ९४७ ९४८ ९४९ ९५० ९५१ ९५२ ९५३ ९५४ ९५५ ९५६ ९५७ ९५८ ९५९ ९६० ९६१ ९६२ ९६३ ९६४ ९६५ ९६६ ९६७ ९६८ ९६९ ९७० ९७१ ९७२ ९७३ ९७४ ९७५ ९७६ ९७७ ९७८ ९७९ ९८० ९८१ ९८२ ९८३ ९८४ ९८५ ९८६ ९८७ ९८८ ९८९ ९९० ९९१ ९९२ ९९३ ९९४ ९९५ ९९६ ९९७ ९९८ ९९९ १०००

१ गरज़ हम ताक़तवरों को चाहिए कि कमज़ोरों के कमज़ोरियों की रि'आयत करें न कि अपनी खुशी करें।

२ हम में हर शख्स अपने पड़ोसी को उसकी बेहतरी के वास्ते खुश करे; ताकि उसकी तरक्की हो।

३ क्यूँकि मसीह ने भी अपनी खुशी नहीं की “बल्कि यूँ लिखा है; तेरे लान तान करनेवालों के लान'तान मुझ पर आ पड़े।”

४ क्यूँकि जितनी बातें पहले लिखी गईं, वो हमारी ता'लीम के लिए लिखी गईं, ताकि सब्र और किताब'ए मुक़द्दस की तसल्ली से उम्मीद रखे।

५ और खुदा सब्र और तसल्ली का चश्मा तुम को ये तौफ़ीक़ दे कि मसीह ईसा के मुताबिक़ आपस में एक दिल रहो।

६ ताकि तुम एक दिल और एक ज़बान हो कर हमारे खुदावन्द ईसा मसीह के खुदा और बाप की बड़ाई करो।

७ पस जिस तरह मसीह ने खुदा के जलाल के लिए तुम को अपने साथ शामिल कर लिया है उसी तरह तुम भी एक दूसरे को शामिल कर लो।

८ में कहता हूँ कि खुदा की सच्चाई साबित करने के लिए मसीह मख्तूनों का ख़ादिम बना ताकि उन वा'दों को पूरा करूँ जो बाप दादा से किए गए थे।

९ और ग़ैर क्रौमों भी रहम की वजह से खुदा की हम्द करें चुनाँचे लिखा है,

“इस वास्ते मैं ग़ैर क्रौमों में तेरा इकरार करूँगा और तेरे नाम के गीत गाऊँगा।”

१० और फिर वो फ़रमाता है “ऐ'ग़ैर क्रौमों उसकी उम्मत के साथ खुशी करो।”

११ फिर ये “ऐ, ग़ैर क्रौमों खुदावन्द की हम्द करो

और उम्मतें उसकी सिताइश करें!”

12 और यसायाह भी कहता है  
यस्सी की जड़ ज़ाहिर होगी  
या'नी वो शख्स जो ग़ैर क़ौमों पर हुकूमत करने को उठेगा,  
उसी से ग़ैर क़ौमों उम्मीद रखेंगी।

13 पस खुदा जो उम्मीद का चश्मा है तुम्हें ईमान रखने के ज़रिए  
सारी खुशी और इत्मीनान से मा'मूर करे ताकि रूह — उल कुदूस  
की कुदरत से तुम्हारी उम्मीद ज़्यादा होती जाए।

14 ऐ मेरे भाइयों; मैं खुद भी तुम्हारी निस्वत यक़ीन रखता हूँ  
कि तुम आप नेकी से मा'मूर और मुकम्मल मा'रिफ़त से भरे हो  
और एक दूसरे को नसीहत भी कर सकते हो।

15 तोभी मैं ने कुछ जगह ज़्यादा दिलेरी के साथ याद दिलाने  
के तौर पर इसलिए तुम को लिखा; कि मुझे को खुदा की तरफ़ से  
ग़ैर क़ौमों के लिए मसीह ईसा मसीह के खादिम होने की तौफ़ीक़  
मिली है।

16 कि मैं खुदा की खुशख़बरी की ख़िदमत इमाम की तरह  
अंजाम दूँ ताकि ग़ैर क़ौमों नज़र के तौर पर रूह — उल कुदूस से  
मुक़द्दस बन कर मक़बूल हो जाएँ।

17 पस मैं उन बातों में जो खुदा से मुतल्लिक़ हैं मसीह ईसा के  
ज़रिए फ़ख़र कर सकता हूँ।

18 क्यूँकि मुझे किसी और बात के ज़िक़र करने की हिम्मत नहीं  
सिवा उन बातों के जो मसीह ने ग़ैर क़ौमों के ताबे करने के लिए  
क़ौल और फ़ैल से निशानों और मोज़िज़ों की ताक़त से और रूह  
— उल कुदूस की कुदरत से मेरे वसीले से की।

19 यहाँ तक कि मैने येरूशलेम से लेकर चारों तरफ़ इल्लुरिकुम  
सूबे तक मसीह की खुशख़बरी की पूरी पूरी मनादी की।

20 और मैं ने यही हौसला रखा कि जहाँ मसीह का नाम नहीं लिया गया वहाँ खुशखबरी सुनाऊँ ताकि दूसरे की बुनियाद पर इमारत न उठाऊँ।

21 बल्कि जैसा लिखा है वैसा ही हो जिनको उसकी खबर नहीं पहुँची वो देखेंगे; और जिन्होंने नहीं सुना वो समझेंगे।

22 इसी लिए मैं तुम्हारे पास आने से बार बार रुका रहा।

23 मगर चूँकि मुझे अब इन मुल्कों में जगह बाकी नहीं रही और बहुत बरसों से तुम्हारे पास आने का मुश्ताक भी हूँ।

24 इसलिए जब इस्फ़ानिया मुल्क को जाऊँगा तो तुम्हारे पास होता हुआ जाऊँगा; क्योंकि मुझे उम्मीद है कि उस सफ़र में तुम से मिलूँगा और जब तुम्हारी सोहबत से किसी क्रदर मेरा जी भर जाएगा तो तुम मुझे उस तरफ़ खाना कर दोगे।

25 लेकिन फिलहाल तो मुक़द्दसों की खिदमत करने के लिए येरूशलेम को जाता हूँ।

26 क्योंकि मकिदुनिया और अखिया के लोग येरूशलेम के ग़रीब मुक़द्दसों के लिए कुछ चन्दा करने को रज़ामन्द हुए।

27 किया तो रज़ामन्दी से मगर वो उनके क़र्ज़दार भी हैं क्योंकि जब ग़ैर क़ौमों रूहानी बातों में उनकी शरीक हुई हैं तो लाज़िम है कि जिस्मानी बातों में उनकी खिदमत करें।

28 पस मैं इस खिदमत को पूरा करके और जो कुछ हासिल हुआ उनको सौंप कर तुम्हारे पास होता हुआ इस्फ़ानिया को जाऊँगा।

29 और मैं जानता हूँ कि जब तुम्हारे पास आऊँगा तो मसीह की कामिल बर्क़त लेकर आऊँगा।

30 ऐ, भाइयों; मैं ईसा मसीह का जो हमारा खुदावन्द है वास्ता देकर और रूह की मुहब्बत को याद दिला कर तुम से गुज़ारिश करता हूँ कि मेरे लिए खुदा से दुआ करने में मेरे साथ मिल कर मेहनत करो।

31 कि मैं यहूदिया के नाफ़रमानों से बचा रहूँ, और मेरी वो ख़िदमत जो येरूशलेम के लिए है मुक़द़सों को पसन्द आए।

32 और खुदा की मर्ज़ी से तुम्हारे पास खुशी के साथ आकर तुम्हारे साथ आराम पाऊँ।

33 खुदा जो इत्मीनान का चश्मा है तुम सब के साथ रहे; आमीन।

## 16

?????? ?? ????? ?????????? ????? ??????

1 मैं तुम से फ़ीबे की जो हमारी बहन और किन्खरिया शहर की कलीसिया की खादिमा है सिफ़ारिश करता है।

2 कि तुम उसे खुदावन्द में कुबूल करो, जैसा मुक़द़सों को चाहिए और जिस काम में वो तुम्हारी मोहताज हो उसकी मदद करो क्यूँकि वो भी बहुतों की मददगार रही है; बल्कि मेरी भी।

3 प्रिस्का और अक्विला से मेरा सलाम कहो वो मसीह ईसा में मेरे हमख़िदमत हैं।

4 उन्होंने मेरी जान के लिए अपना सिर दे रखवा था; और सिर्फ़ में ही नहीं बल्कि ग़ैर क्रौमों की सब कलीसियाएँ भी उनकी शुक्रगुज़ार हैं।

5 और उस कलीसिया से भी सलाम कहो जो उन के घर में है; मेरे प्यारे अपीनितुस से सलाम कहो जो मसीह के लिए आसिया का पहला फल है।

6 मरियम से सलाम कहो; जिसने तुम्हारे वास्ते बहुत मेहनत की।

7 अन्द्रनीकुस और यून्यास से सलाम कहो वो मेरे रिश्तेदार हैं और मेरे साथ कैद हुए थे, और रसूलों में नामवर हैं और मुझ से पहले मसीह में शामिल हुए।

8 अम्पलियातुस से सलाम कहो जो खुदावन्द में मेरा प्यारा है।

9 उरबानुस से जो मसीह में हमारा हमखिदमत है और मेरे प्यारे इस्तबुलुस से सलाम कहो।

10 अपिल्लेस से सलाम कहो जो मसीह में मक्रबूल है अरिस्तुबुलुस के घर वालों से सलाम कहो।

11 मेरे रिश्तेदार हेरोदियून से सलाम कहो; नरकिस्सुस के उन घरवालों से सलाम कहो जो खुदावन्द में हैं।

12 त्रफैना त्रुफोसा से सलाम कहो जो खुदावन्द में मेहनत करती है प्यारी परसिस से सलाम कहो जिसने खुदावन्द में बहुत मेहनत की।

13 रूफुस जो खुदावन्द में बरगुज़ीदा है और उसकी माँ जो मेरी भी माँ है दोनों से सलाम कहो।

14 असुंक्रितुस और फ़लिगोन और हिरमेस और पत्रुबास और हिरमास और उन भाइयों से जो उनके साथ हैं सलाम कहो।

15 फ़िलुलुगुस और यूलिया और नयरयूस और उसकी बहन और उलुम्पास और सब मुक़द्दसों से जो उन के साथ हैं सलाम कहो।

16 आपस में पाक बोसा लेकर एक दूसरे को सलाम करो मसीह की सब कलीसियाएँ तुम्हें सलाम कहती हैं।

17 अब ऐ, भाइयों मैं तुम से गुज़ारिश करता हूँ कि जो लोग उस ता'लीम के बरखिलाफ़ जो तुम ने पाई फूट पड़ने और ठोकर खाने का ज़रिया हैं उन को पहचान लो और उनसे किनारा करो।

18 क्यूँकि ऐसे लोग हमारे खुदावन्द मसीह की नहीं बल्कि अपने पेट की खिदमत करते हैं और चिकनी चुपड़ी बातों से सादा दिलों को बहकाते हैं,

19 क्यूँकि हमारी फ़रमाबरदारी सब में मशहूर हो गई है इसलिए मैं तुम्हारे बारे में खुश हूँ लेकिन ये चाहता हूँ कि तुम नेकी के ऐतिबार से अक्लमंद बन जाओ और बदी के ऐतिबार से भोले बने रहो।

20 खुदा जो इत्मीनान का चश्मा है शैतान तुम्हारे पाँव से जल्द कुचलवा देगा ।

हमारे खुदावन्द ईसा मसीह का फ़ज़ल तुम पर होता रहे ।

21 मेरे हमख़िदमत तीमुथियुस और मेरे रिश्तेदार लूकियुस और यासोन और सोसिपत्रुस तुम्हें सलाम कहते हैं ।

22 इस ख़त का कातिब तिरतियुस तुम को खुदावन्द में सलाम कहता है ।

23 गयुस मेरा और सारी कलीसिया का मेहमानदार तुम्हें सलाम कहता है इरास्तुस शहर का ख़ज़ांची और भाई क्वारतुस तुम को सलाम कहते हैं ।

24 हमारे खुदावन्द ईसा मसीह का फ़ज़ल तुम सब के साथ हो; आमीन ।

25 अब खुदा जो तुम को मेरी खुशख़बरी या'नी ईसा मसीह की मनादी के मुवाफ़िक़ मज़बूत कर सकता है, उस राज़ के मुक्काशिफ़ा के मुताबिक़ जो अज़ल से पोशीदा रहा ।

26 मगर इस वक़्त ज़ाहिर हो कर खुदा'ए अज़ली के हुक्म के मुताबिक़ नबियों की किताबों के ज़रिए से सब क़ौमों को बताया गया ताकि वो ईमान के ताबे हो जाएँ ।

27 उसी वाहिद हकीम खुदा की ईसा मसीह के वसीले से हमेशा तक बड़ाई होती रहे । आमीन ।

**इंडियन रिवाइज्ड वर्जन (IRV) उर्दू - 2019**  
**The Holy Bible in the Urdu language of India: इंडियन**  
**रिवाइज्ड वर्जन (IRV) उर्दू - 2019**

copyright © 2019 Bridge Connectivity Solutions Pvt. Ltd.

Language: اردو (Urdu)

Contributor: Bridge Connectivity Solutions Pvt. Ltd.

This translation is made available to you under the terms of the Creative Commons Attribution Share-Alike license 4.0.

You have permission to share and redistribute this Bible translation in any format and to make reasonable revisions and adaptations of this translation, provided that:

You include the above copyright and source information.

If you make any changes to the text, you must indicate that you did so in a way that makes it clear that the original licensor is not necessarily endorsing your changes.

If you redistribute this text, you must distribute your contributions under the same license as the original.

Pictures included with Scriptures and other documents on this site are licensed just for use with those Scriptures and documents. For other uses, please contact the respective copyright owners.

Note that in addition to the rules above, revising and adapting God's Word involves a great responsibility to be true to God's Word. See Revelation 22:18-19.

2023-01-03

---

PDF generated using Haiola and XeLaTeX on 18 Apr 2025 from source files dated 19 Apr 2023

4a2fe4e0-ffe8-5377-87c7-19b3106ba2bc